ISSN - 2394-2266

धर्माबाद शिक्षण संस्था, धर्माबाद द्वारा संचलित

लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय

धर्माबाद, जि. नांदेड (महा.)

(नॅक पुनर्मूल्यांकन 2.87 CGPA के साथ 'B' मानांकन)

तथा

महाराष्ट्र हिंदी परिषद

के संयुक्त तत्त्वावधान में

द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं

महाराष्ट्र हिंदी परिषद का २५ वाँ (रजत महोत्सवी) अधिवेशन

सार्थक उपलब्धि

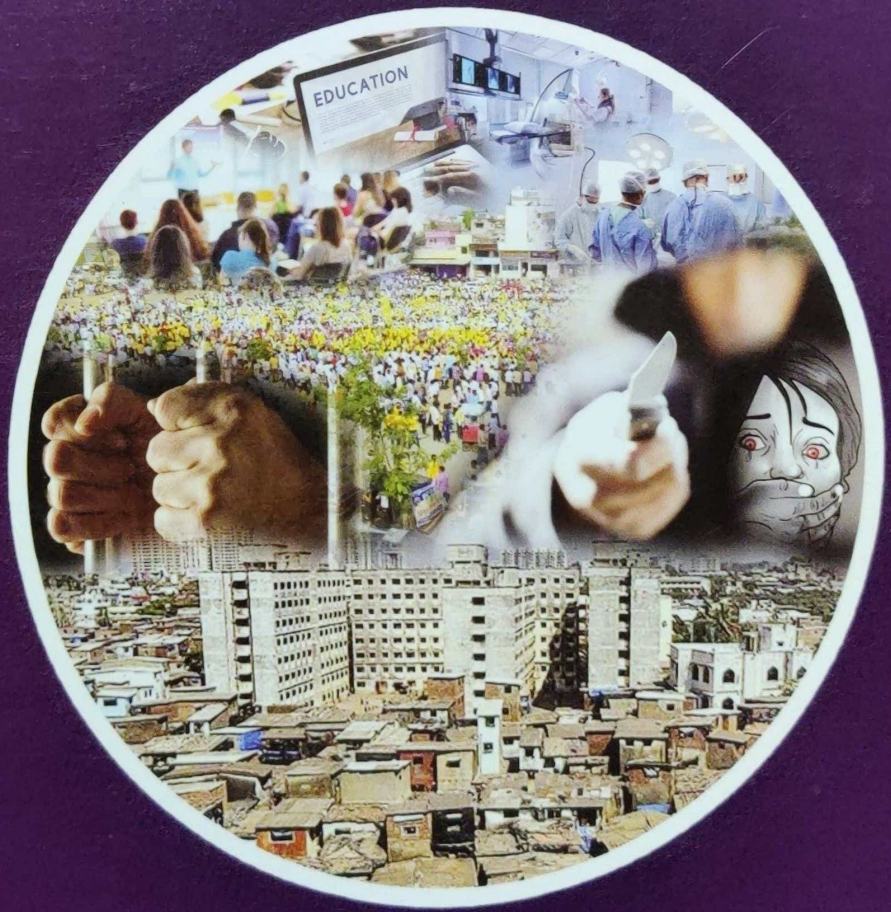

२१ वीं शताब्दी के हिंदी साहित्य में महानगरीय बोध

२२-२३ दिसंबर, २०१७

संपादक
डॉ. मधुकर खराटे

अतिथि संपादक
डॉ. प्रतिभा जी. येरेकार

ISSN - 2394-2266

धर्माबाद शिक्षण संस्था, धर्माबाद द्वारा संचलित

लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय

धर्माबाद, जि. नांदेड (महा.)

(नॅक पुनर्मूल्यांकन 2.87 CGPA के साथ 'B' मानांकन)

तथा

महाराष्ट्र हिंदी परिषद

के संयुक्त तत्त्वावधान में

द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं

महाराष्ट्र हिंदी परिषद का २५ वाँ (रजत महोत्सवी) अधिवेशन

सार्थक उपलब्धि

२१ वीं शताब्दी के हिंदी साहित्य में महानगरीय बोध

२२-२३ दिसंबर, २०१७

प्रधान संपादक

डॉ. मधुकर खराटे

कार्यकारी संपादक

डॉ. राजेंद्र रोटे

अतिथि संपादक

डॉ. प्रतिभा जी. येरेकार

संपादक मंडल सदस्य

डॉ. अनिल साळुंखे

डॉ. अरुण घोगरे

डॉ. गजानन चव्हाण

प्रा.एस.डी. कोरेबाईनवाड

संपादकीय एवं प्रकाशकीय कार्यालय

महाराष्ट्र हिंदी परिषद

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर-४१६००४.

e-mail : maharashtrahindiparishad@gmail.com

अ.क्र.	शीर्षक	संशोधक	पृ.क्र.
33)	महानगरीय के संदर्भ में दुक्ख-सुक्ख उपन्यास का औचित्य	प्रा.डॉ. पिरू आर. गवली	97
34)	सुरेन्द्र वर्मा के उपन्यासो में महानगरीय बोध	प्रा.डॉ. अंजली चौधरी	100
35)	कॉरपोरेट जगत के अंदर का घिनौना सच : एक ब्रेक के बाद	डॉ.शेख शहेनाज अहेमद	102
36)	इक्कवीसवी सदी के प्रथम दशक के उपन्यासों में व्यक्त महानगरीय बोध (शेष कादंबरी, विजन, दिल्ली दरवाजा, इक आग का दरिया है)	प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर, प्रा.डॉ. शेख मुखत्यार	104
37)	महानगरीय समाज में बदलते मानवीय मूल्य (नासिरा शर्मा के अक्षयवट उपन्यास के विशेष संदर्भ में)	प्रा.डॉ.ए.जे. बेवले	106
38)	सफेद कमीज के नीचे का सच : नरक मसीहा	डॉ. संतोष मोटवानी	109
39)	'बेघर' उपन्यास में महानगरीय बोध	प्रा.डॉ. संतोष विजय येरावार	113
40)	21 वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में महानगरीय बोध- गिलिगडू के विशेष संदर्भ में	डॉ. संगिता लोमटे	115
41)	इक्कीसवी सदी के उपन्यासों में बदलता महानगरीय बोध	प्रा. डॉ. शंकर शिवशेट्टे	117
42)	'सोचा न था' उपन्यास में व्यक्त महानगरीय जीवन की त्रासदी	डॉ. गोविंद गुंडप्पा शिवशेट्टे	120
43)	'मुन्नी मोबाईल' उपन्यास में चित्रित कॉल सेंटर की दुनिया	डॉ. जहीरुद्दिन र. पठान	121
44)	महानगरीय बोध का जीवंत दस्तावेज : दौड	प्रा. डॉ. शिंदे पी. बी.	124
45)	21 वी सदी के हिंदी महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में महानगरीय बोध	डॉ. अनिलकुमार राठोड	126
46)	21वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में चित्रित महानगरीय बोध	डॉ. भगवान रामकिशन कदम	128
47)	जीरोरोड उपन्यास में चित्रित महानगरीय बोध	डॉ. नागनाथ संभाजी वारले	130
48)	21 वीं सदी के उपन्यास में महानगरीय बोध	डॉ. रेखा मुळे (कैवाडे)	132
49)	महानगरीय जीवन की जटिलता - 'विजन' के संदर्भ में	प्रा.डॉ. मीना भाऊराव घुमे	133
50)	21 वीं शताब्दी के हिंदी उपन्यास साहित्य में महानगरीय बोध	प्रा. आमलपूरे विश्वनाथ	136
51)	अजनबी इंद्रधनुष : महानगरीय जीवन की विकृतियों का चित्रण	डॉ. पांडुरंग ज्ञानोबा चिलगर प्रा.करमुंगीकर गोविंदराव	138
52)	महानगरीय परिवेश में नारी की स्थिति (विशेष संदर्भ - क्या मुझे खरीदागे उपन्यास से)	डॉ. भालेराव व्ही.के.	140
53)	'दौड' उपन्यास में व्यक्त महानगरीय बोध संवेदना	प्रा. डॉ.शे.रज़िया शहेनाज़	143
54)	21 वीं शताब्दी के हिन्दी उपन्यास साहित्य में महानगरीय बोध : भगवानदास मोरवाल लिखित उपन्यास 'नरक मसीहा' के विशेष सन्दर्भ में	डॉ. विनोदकुमार वायचळ	146
55)	दौड़ उपन्यास में चित्रित महानगरीय जीवन के विविध आयाम	विक्रम बालकृष्ण वारंग	149
56)	'गटर का आदमी' में महानगरीय बोध	जनार्धन	151
57)	21वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में महानगरीय बोध	कोडगावे किशन	152
58)	'क्या मुझे खरीदोंगें उपन्यास में महानगरीय बोध'	सावते राजू अशोक	154
59)	मधु काँकरिया का पत्ताखोर उपन्यास में चित्रित महानगरीय नशाखोरी का समाजशास्त्र	संजीव मुकिंदराव कदम	156
60)	21 सदी की मधु काँकरिया के 'सलाम आखिरी' उपन्यास में महानगरीय वेश्या जीवन	घोडगे भीमराव रामकिशन	158
61)	एक ब्रेक के बाद उपन्यास में महानगरीय बोध	जोगदंड लक्ष्मणराव	160
62)	ज्ञान प्रकाश विवेक द्वारा रचित 'दिल्ली दरवाजा' (2006) उपन्यास में महानगरीय बोध	कदम अश्विनी भारत	165
63)	मधु काँकरिया का सेज पर संस्कृत उपन्यास में व्यक्त महानगरीय धार्मिक जीवन	प्रा. पाटील सुखदेव रामा	167

'बेघर' उपन्यास में महानगरीय बोध

प्रा.डॉ. संतोष विजय येरावार
हिंदी विभाग
देगलूर महाविद्यायल,देगलूर
मो. 8087004972
E.mail : ysantosh2723@gmail.com

हिन्दी साहित्य में बदलते मानवी जीवन, समाज और महानगरीय परिवेश का यथार्थ अंकन किया गाया है | महानगरीय जीवन, सभ्यता, मुल्य, अचार-विचार, तथा सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं पारिवारीक समस्याओंका चित्रण उपन्यास में हुआ है | महानगरों का परीवेश एवं समस्याये यह समय के साथ बदल रहे है | मानवी जीवन एक ओर गतीमान हुवा है तो दुसरी ओर पतित और मुल्यहिन भी हुआ है | एक और भौतिक साधनों की संपन्नता है तो दुसरी ओर असवंदेनशीलता, क्रुरता, घृणा और अमानवीयता ने अपनी जडे मजबुत की है | अनेक सुविधाओ के साथ अनगिनत समस्याओने भी अपने जाल में मानव और समाज को जखड रखा है | गुन्हेगारी, नशाखोरी, घटस्फोट,बलात्कार, हत्या, अपहरण, विवाह बाहय संबध, विवाह पुर्व संबध, कुमारी मॉताये, अनुबंध विवाह प्रणाली, आदि अनेको समस्याओने मानवी जीवन को प्रभावित किया है | महानगरीय परिवेश ने अजनबीपन, अेकलापन कुंठा, निराशा और पारिवारिक विघटन को भी बढावा दिया है | महानगरीय पिरवेश ने आस्था हीन एवं मुल्यहीन जीवन को पनपने का मौका दिया है | मनुष्य जीवन को जीतना सुविधा भोगी महानगर ने बनाया है उतना हि मनुष्य को कुंठित, घृणित, विक्षिप्त एवं अहंकारी भी बनाया है | मनुष्य को भौतिक साधनोंने जड और अचेतन बना दिया है | सारे रिश्ते- नाते को दरकिनार कर मनुष्य को व्यवहारिक बना दिया है |

ममता कालिया का 'बेघर' उपन्यास मनुष्य के अधुरेपन, कुंठा, संत्रास, घुटन, अजनबीपन, निराशा और अतृप्त मानसिकता को उजागर करता है | बेघर उपन्यास में दिल्ली और मुंबई महानगरों का चित्रण किया गया है | महानगरों की वास्तविकता को तथा सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक परिवेश को अपनी संपूर्णता के साथ उजागर किया गया है | उपन्यास में मुंबई शहर के वरली, महालक्ष्मी, मुहम्मद अली स्ट्रीट, पेडर रोड, नेपियनसी रोड, आदि स्थलों की विशेषताओं का भी चित्रण किया गया है | मुंबई के धोबीघाट, रेलपट्टियाँ फुटपाथ एवं बीच आदि परिवेश का भी चित्रण किया है लोगो के रहन-सहन,वेश-भुषा, खान-पान, बोलचाल आदि का भी चित्रण यथार्थ बन पडता हैं | मुंबई शहर की सबसे बडी विशेषता है यहाँ के फुटपाथ, रेलपट्टी और भाषागत विविधता लोग यहाँ अपना पेट भरने के लिए आते है और मुंबई सभी का पेट भी भरती है |

मुंबई के लागो का जीवन संबधी नजरिया भीन्न-भीन्न हैं | यहाँ संघर्ष, अय्याशी छटपटाहट, मनोरंजन,व्यापार सभी हे सब लोगो का जीवन जीने का अंदाज निराला है, " दिन में मुंबई में पटरियाँ पर जपानी, अमेरिकी और जर्मन चीजें बिकने के लिए पडी रहती है, रात में औरतें | वहाँ भुख के लिए शादी नहीं करनी पडती, चार आने में उसलपाव और चार रुपए मैं औरत मिल जाती है |"[1] मुंबई के समुद्री किनारों की अपनी अलग खाशीयत हैं | लोग यहाँ अपनी थकान मिटाने और जीवन का आनंद लेने आते है मुंबई तो आदमीयों का जंगल है, विविध प्रांत और भाषा के लोग यँहपर आकर बसे हैं | यहाँ का फुटपाथ, मछली व्यापार, वडापाव, भेलपुरी, चौडी सडके, यातायात के साधन, कोलिन औरते, सडको पर होनलेवाले अपघात, बीचपर होनेवाले प्रेमप्रसंग, सब्जी और फलों की मंडी, खानपान आदि सभी का 'बेघर' उपन्यास में चित्रण किया गया हैं जो महानगरों के चित्र को मस्तिष्क पटल पर निर्माण करता है|

'बेघर' उपन्यास का प्रमुख पात्र परमतीज हैं जिसकी मानसिकता को उजागर किया गाया हैं | परमजीत अपने पिता के दिल्ली के परंपरागत व्यापार को ठुकराकर मुंबई नोकरी के लिए आता है | मुंबई की चकाचौंध, यातायात के साधन और सुंदर लडकियों को देखकर परमजीत मुंबई के परिवेश में खो जाता है | मुंबई शहर सपनों का और अय्याशी का शहर हैं यहॉपर शरीर भुख मिटाना बहुत सहज है | पाश्चात संस्कृती ने स्त्री-पुरुष के बंधनो की मर्यादा को तोड दिया है | स्त्री पुरुष दोनो आझाद रहना चाहते है | शारिरिक संबध रखना उन्हे अटपिटा नहीं लगता है | परमजीत संजीवनी नामक युवती से मिलता है | जो बँक में नौकरी करती है | दोनो साथ-साथ रहते घुमते, खाते, और समुद्र के किनारे घंटो बैठा करते थे | संजीवनी को लगता हैं "अब अभी कोई उसकी जिंदगी मे नही आएगा, कोई उसके नजदीक आकार नहीं बैठेगा उसे वरसोवा में औंधी पडी नावों के पीछे नहीं ले जाएगा और कोई हाथ उसे ब्लाउज के बटनों से नहीं खेलेगा | वह अपने अकेलेपन में सिमटी जा रही थी |"[2]

संजीवनी के जीवन में इस कश्मकश के दौर मे परमजीत आता है परमजीत का सौंदर्य और पौरुषत्व उसे खुब भाता है और आर्कषित भी करता हैं | उसे देखकर संजीवनी के मन में काम वासना निर्माण हो जाती है | संजीवनी के मन में परमजीत से शारिरीक संबध रखने की लालसा होती है और वह इसका इजहार भी खूब करती है जिससे परमजीत भी प्रणय के लिए लालायत होता है | वह कहता है "अकेले में तुम्हारे तलुवे सहलाकर, तुम्हारे बाल खोलकर तुम्हारा ब्लाऊज मसलकर तुम्हें एक ही पल में लडकी से औरत बना दुँगा, संजी |"[3] शारिरिक संबधो के लिए खुला आव्हान दिया जाता यह महानगरों की वास्तविकता है | विवाह से पहले शारिरिक संबध हमारे संस्कृती के लिए अमान्य है वहीपर महानगरोंमे शारिरिक संबध आम हो गए है | ना लडके को न हीं लडकी को इसमे परहेज है | परमजीत कपडो के भीतर की बाते करके संजीवनी को उत्तेजित करता है |

एक दिन संजीवनी को परमजीत छुट्टी के दिन दप्तर लेकर जाता है | और अपनी कॅबीन में उसे बाहों में भर लेता है | और अपनी कावासना की तृप्ती हेतू उसे राजी कर लेता है | "संजवनी को मसलकर, सहलाकर, गुदगुदाकर वह इतना उत्तेजित कर दिया कि वह

ISSN : 2394-2266

स्वयं निढाल हो गई | ऐसे ही उस क्षण में परमजीत को लगा जैसे उसने गर्म मोम में अपने को डाल दिया है, वह उसमें फसता गया।"4 परमजीत संजीवनी से शारिरिक संबध प्रस्तापित करता है | महानगरों में शारिरीक भुख को अवैध संबंधो के व्दारा पुरा करने की मानसिकता पनप रही है | प्रेम के उदात्त रुप को तिलांजली दे वासनांध प्रेम को अपनाया जा रहा हैं | परमजीत संजीवनी से संबंध प्रस्थापित करने के बाद उसे ईस बात से पीडा होती है कि वह संजीवनी से संबधं रखनेवाला पहला व्यक्ती नहिं है | संबधं रखते समय संजीवनी को होनेवाली पीडा और रक्त रिझाव न होने के कारण वह यह समझ लेता है कि संजीवनी ने पहले भी शारिरीक संबध रखे है | महानगरों में मुक्त यौन संबधो कि बढती मानसिकता को उघाडा गया है | परमजीत के कथन से यह पता चलता हैं की दोनो ने ईसके पहले संभोग किया है | कुँवारी लडकी से समागम न होने की तकलीफ और घृणा के कारण वह संजीवनी को छोडकर जाना चाहता है | संजीवनी उसे समझाने का प्रयास करती है | पंरतु वह कुछ भी मानने को तैयार हि नही है | और संजीवनी फिर से अकेली होती है |

पहले विपिन से वह आहत होती है ओर बादमें परमजीत से | संजीवनी के माध्यम से पुरुषप्रधान वासनांध मानसिकता को उघाडा हैं | संजीवनी को दोनो अपनी वासना के लिए भोगते है और बादमे उसे छोड देते है | उपभोग करना और छोडना यह धारना दिन-प्रती दिन महानगरों में भयावह रुप धारण कर रही है | स्त्री स्वतंत्रता को यौन संबधो तक हि सिमित रखा है | पुरुष अनेको से संबध रखना चाहता हैं परंतु स्त्री अगर कोई गलती करे तो उसे वह स्वीकार नहीं है | पुरुष ने हमेशा से स्त्रीयों के विषय में घटिया, घृणित तिरस्कृत और दकियानुसी हि सोच रखी हैं | पुरुष ने स्त्री प्रेम को केवल शरीर तक हि सिमित रखा है, उसके अंर्तमन को समझने का प्रयास कभी किया ही नही है | हर कोई उसे अपनी वासना का शिकार बनाना चाहता हैं | स्त्री स्वातंत्रता व स्त्री अस्तित्व केवल पुरुषों तक ही सिमित रह गया है | पुरुषोव्दारा निर्मित मर्यादायों को तोडना आज भी स्त्रीयों के लिए दुर की कौडी है | पुरुष प्रधान संस्कृती ने सामाजिक,धार्मिक, आर्थिक एवं पारिवारिक सभी प्रकारके बंधनो के जंजीरो में स्त्रीयों को जखडकर रखा है | स्त्रीयो के अस्तित्व को परिवार तक और घर की चार दिवारों तक हि सिमित रखा है | परमजीत अनेको स्त्रियों के साथ संबध रखना चाहता है और उसकी यह धारना है कि वह जिस किसे के साथ भी प्रणय करे वह कूँवारी और चरित्र संपन्न हो पंरतु पुरुषो के विषय में चरित्रसंपन्नता एवं कुँवारापण कोई मायने नहि रखता है | पुरुष जहॉ-चाहे मुँह मारे और स्त्री केवल अपने चरित्र की देखभाल करती रहे यह घटिया सोच उपन्यास में अभिव्यक्त हुई है | परमजीत केवल संजीवनी को इसलिए छोड देता है कि उसे लगता है कि संजीवनी ने पहले भी प्रणय क्रिडा कि है और जब वह दिल्ली जाकर रमा से विवाह करता हैं तो वो केवल ईस बात से खुश होता है कि उसके मानस में जो कँवारेपण के मापदंड है उसपर वह खरी उतरती है | इस विषय में तसलीमा नसरीन कहती है, "मै तो ऐसे प्रगतिशील पुरुषो को भी जानती हूँ जिन्होने अपनी सुहागरात में सफेद चादर का प्रयोग किया ताकी कौमार्य के संदर्भ में संतुष्ट हो सके अगर उन्होंने यह देखा कि चादर पर खुन नहि था तो उन्होने अपनी पत्नियों के चरित्र -पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया |"5 स्त्री संबधी यह धारणा कितनी विक्षिप्त, क्रुर और घृणित है | संजीवनी के जीवन से विपिन और परमजीत खिलौनी की तरह खेलते है और जाते है |

'वेघर' उपन्यास में भी परमजीत की दकियानुसी और विकृत मानसिकता को उघाडा है | "लडकियों के कुँवारेपन की पहचान उसने चीख-पुकार और खुन से संबध्द की थी | आंरभिक विरोध के बाद संजीवनी उसे प्रस्तुत मिली अैर बाधाहीन इस समय अपने बदन में यह अहसास लिए व संजवनी को घूरता बैठा था | उसे गुस्सा नहीं आ रहा था, खीझ भी नहीं पर वह हार गया था | उसने कतई नहीं सोचा था कि संजीवनी की उससे अलग एक व्यक्तिगत दुनिय रही होगी जिसका भागीदार कोई और रहा होगा | पहला न होने की निराशा के सन्नाटे के साथ-साथ उसे अपनी जिंदगी का सारा नक्शा मुचडा हुआ दिखाई दे रहा था |"6 महागरो की वास्तविकता को इस उपन्यास में उघाडा गया है, की किस प्रकार कामकाजी महिलाओं को बहिला-फुसलाकर उसे अपनी वासना का शिकार बनाया जाता है और महिलाये भी किस प्रकार कामेच्छा के लिए आतुर होती है इस वास्तविकता को भी उघाडा गया है |

महानगरों में किस प्रकार व्यवसानाधीनता के शिकार युवक हो रहे है इस वास्तविकता को उपन्यास में उजागर किया गया है | भौतिक साधनों की विपुलता, चकाचौंध महानगरीय परिवेश, नशों के विविध साधनों की सहज उपलब्धता, कामों का बढता दबाव, पारिपारिक असंतोष,अतृप्त काम वासना, निरस जीवन एवं अजनबीपण के कारन महानगरीय युवक व्यसंनाधिन हो रहे है | परमजीत भी पारिवारिक असंतोष के कारण नशे के आदि हो जाता है | रमा के स्वार्थी, अडियल, और संकुचित मानसिकता के कारण परमजीत शराब और सिगरेट का आदि हो जाता है और उसकी मृत्यु भी उसी कारण होती है | आकांक्षाये मनुष्यो को किस प्रकार पीडा देती है इसका चित्रण उपन्यास में किया गया है |

'वेघर' उपन्यास में मुंबई शहर की सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक और भाषाई विशेषताओं को उघाडा गया हैं | महानगरो की विभिन्न विशेषतायें जैसे यातायात, भाषा, वेश-भुषा, रहन-सहन, सडके, बाजार, सांस्कृतिक बदलाव, आदि को भी अपनी पुर्णता के साथ अभिव्यक्त किया गया है | महानगरों की बढती भौतिक सुविधायें, युवकों की बदलती मानसिकता, व्यसनाधिनता, उन्मुक्त यौन संबध, विवाह पुर्व अवैद्य संबध आदि को भी परमजीत और संजीवनी के माध्यम से उजागर किया गया है | मुंबई महानगर के लागो में व्याप्त निराशा, अदम्य लालसा, वासनाधता, अजनबीपन, अकेलापान, संत्रास, उदासी, घुटन, बिघराव, बनते बिघडते रिश्ते आदि को भी उघाडा गया है |

संदर्भ : 1) बेघर ,ममता कालिया, पृ. 28
2) वही. पृ. 83
3) वही. पृ. 92
4) वही. पृ. 92
5) हिन्दी उपन्यासों में प्रतिबिंबित महानगर - डॉ. बरसाती कहार पृ. 133
6) बेघर ,ममता कालिया, पृ. 93

●●●

ISSN : 2394-2266